NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2024

HINDI FIRST ADDITIONAL LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2 hours 70 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

किसी भी अनुभाग से कोई दो प्रश्न चुनें और अपने उत्तर पूरे करें।

भाग क

प्रश्न एक

१.१ कविता: माता

१.१.१ माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "माता" के केंद्रीय विषय का वर्णन करें।

- उत्तर: कविता का केंद्रीय विषय एक माँ द्वारा अपने बच्चे के लिए किए गए बिना शर्त प्यार और बलिदान के इर्द-गिर्द घूमता है।

१.१.२ कवि ने कविता में माँ की भूमिका को किस प्रकार चित्रित किया है?

- उत्तर: कवि ने माँ को एक दिव्य स्वरूप के रूप में चित्रित किया है जो असीम प्रेम और निस्वार्थता के साथ अपने बच्चे का पालन-पोषण, मार्गदर्शन और सुरक्षा करती है।

१.१.३ कविता में भावनाएँ जगाने के लिए चतुर्वेदी ने किन साहित्यिक युक्तियों का प्रयोग किया है?

- उत्तर: भावनाओं को जगाने और पाठकों पर गहरा प्रभाव डालने के लिए चतुर्वेदी ज्वलंत कल्पना, रूपकों और मानवीकरण का उपयोग किया हैं।

१.१.४ कविता में माँ की तुलना प्रकृति के तत्वों से करनेके महत्व स्पष्ट करें।

- उत्तर: माँ की तुलना प्रकृति के तत्वों से करके, कवि उसके पालन-पोषण और पोषण के गुणों पर प्रकाश डालता है, जीवन और मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में उसकी भूमिका पर जोर देता है।

१.१.५ कविता में वक्ता अपनी माँ के प्रति अपनी कृतज्ञता किस प्रकार व्यक्त करता है?

- उत्तर: वक्ता अपनी माँ को "माता" कहकर संबोधित करता है और जीवन भर उनके प्यार, बलिदान और मार्गदर्शन के लिए दिल से आभार व्यक्त करता है।

१.१.६ कविता के स्वर और पाठक पर उसके प्रभाव पर चर्चा करें।

- उत्तर: कविता का स्वर श्रद्धापूर्ण और भावनात्मक है, जो माताओं के प्रति कृतज्ञता और सम्मान की भावना पैदा करता है। यह एक माँ और उसके बच्चे के बीच के सार्वभौमिक बंधन को उजागर करके पाठक को प्रभावित करता है।

१.१.७ "माता" शीर्षक का क्या महत्व है?

- उत्तर: "माता" शीर्षक भारतीय संस्कृति में माताओं को दी जाने वाली श्रद्धा और सम्मान को दर्शाता है, उन्हें दिव्य और पालन-पोषण करने वाली शख्सियत के रूप में चित्रित किया गया है।

१.१.८ चतुर्वेदी ने कविता में प्रतीकवाद का प्रयोग किस प्रकार किया है?

- उत्तर: माँ के प्यार और बलिदान को प्रकृति के तत्वों के समान शाश्वत और उत्कृष्ट के रूप में प्रस्तुत करने के लिए चतुर्वेदी प्रतीकवाद का उपयोग करते हैं।

१.१.९ कविता में मातृ वृत्ति की भूमिका पर चर्चा करें।

- उत्तर: कविता सुरक्षा, देखभाल और मार्गदर्शन की सहज मातृ प्रवृत्ति पर प्रकाश डालती है जो माताओं के पास अपने बच्चों के प्रति होती है, इसे एक सार्वभौमिक घटना के रूप में प्रदर्शित करती है।

१.१.१० कवि माँ के प्रेम के शाश्वत स्वरूप को किस प्रकार व्यक्त करता है?

- उत्तर: कवि माँ के प्यार की शाश्वत प्रकृति को सभी सीमाओं और कठिनाइयों से परे, कालातीत और अपरिवर्तनीय चित्रित करके व्यक्त करता है।

१.१.११ कविता की संरचना और पाठक पर उसके प्रभाव का विश्लेषण करें।

- उत्तर: कविता का संरचित रूप इसकी गीतात्मक गुणवत्ता और भावनात्मक अनुगूंज को बढ़ाता है, जिससे यह पाठक के लिए अधिक प्रभावशाली और यादगार बन जाती है।

१.१.१२ "माता" कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देता है?

- उत्तर: कवि जीवन को आकार देने और पोषण करने में उनकी अपरिहार्य भूमिका पर जोर देते हुए, माताओं द्वारा किए गए निस्वार्थ प्रेम और बलिदान को सम्मान देने और संजोने का संदेश देता है।

अथवा

१.२ कविता: माता

कवि ने माँ को एक दिव्य व्यक्तित्व के रूप में दर्शाया है, कविता "माता" के संदर्भ में, माँ द्वारा किए गए प्यार, सुरक्षा और बलिदान को समझाते हुए एक निबंध लिखें। आपके निबंध की लंबाई ३०-३५ पंक्तियों की होनी चाहिए।

उत्तर

माँ, जिसे हम प्यार से 'माता' कहते हैं, हमारे लिए भगवान से कम नहीं होती है। मक्खनलाल चतुर्वेदी की कविता "माता" में उन्होंने माँ को एक दिव्य रूप में चित्रित किया है, जो हमें प्यार, सुरक्षा और त्याग की महानता का संदेश देती है।

माँ की ममता में बिना शर्त प्यार होता है, जो किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलता। उसका प्यार सूरज की तरह गर्मजोशी और उत्साह भरा होता है, जो हमें हर परेशानी में भी आगे बढ़ने की साहस और शक्ति देता है।

माँ हमें हर संभव सुरक्षा और सहारा प्रदान करती है। उनकी गोदी में हमें आराम और सुरक्षा का एहसास होता है, जो हमें दुनिया की कठिनाईयों से लड़ने की हिम्मत देता है।

माँ की त्याग की मिसालें अद्भुत होती हैं। वह हमें अपने स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि हमारे भले के लिए हर संभव कठिनाई को झेलती हैं। उनकी कठिनाइयों और

परेशानियों के बावजूद भी, वह हमेशा हमारे साथ खड़ी रहती हैं, हमारे सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती हैं।

माँ की आँचल में हमें प्रेम, सम्मान और शिक्षा की महत्वपूर्ण शिक्षाएं मिलती हैं। वह हमें जीवन के सारे महत्वपूर्ण मौदूल सिखाती हैं, जो हमें समाज में सफलता की ओर अग्रसर करते हैं।

अतः, माँ की प्रेम, सुरक्षा और त्याग की महानता को समझना हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है। उनकी सदैव स्नेहभरी गोदी में हमें सच्चे प्रेम की महिमा को समझने का अद्‍वितीय अवसर मिलता है। इसलिए, हमें हमेशा माँ की प्रेम को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए और उनके प्रति आभार और सम्मान प्रकट करना चाहिए।

अथवा

१.३ कविता: हिमालय

१.३.१ हिमालय कविता पर एक निबंध लिखें। कविता से संबंधित निम्नलिखित विषयों के अंतर्गत कविता का चर्चा करें।

- **शक्ति का प्रतीक**
- **रक्षा करनेवाला**
- **आध्यात्मिक महत्व**
- **एकता**
- **प्रेरणा**

उत्तर

शीर्षक: कविता "हिमालय" में प्रतीकवाद और विषयों की खोज

परिचय:

[लेखक का नाम] की कविता "हिमालय" राजसी पर्वत श्रृंखला के प्रतीकात्मक महत्व और विषयगत गहराई की गहन खोज के रूप में कार्य करती है। ज्वलंत कल्पना और रूपक भाषा के माध्यम से, कविता शक्ति, सुरक्षा, आध्यात्मिकता, एकता और प्रेरणा जैसे विषयों पर प्रकाश डालती है।

शक्ति का प्रतीक:

हिमालय शक्ति के विशाल प्रतीक के रूप में खड़ा है, इसकी विशाल चोटियाँ आकाश की ओर निडरता से उठती हैं। कविता में पहाड़ों को अडिग दिग्गजों, के रूप में चित्रित किया गया है, उनके ऊबड़-खाबड़ इलाकों और लचीलेपन और शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाली स्थायी उपस्थिति के रूप में चित्रित किया गया है। जिस तरह हिमालय समय और मौसम की कसौटी पर खरा उतरता है, उसी तरह वे प्रकृति में निहित शक्ति का प्रतीक हैं, जो प्रतिकूल परिस्थितियोंका मानवता की दृढ़ता की क्षमता की याद दिलाते हैं।

रक्षा करनेवाला:

कविता के भीतर, हिमालय को एक दुर्जेय रक्षक के रूप में दर्शाया गया है, जो अपनी छाया में रहने वालों को नुकसान से बचाता है। उनकी ऊंची ऊंचाइयां बाहरी खतरों के खिलाफ एक बाधा के रूप में काम करती हैं, और उन सभी को अभयारण्य प्रदान करती हैं जो उनकी चोटियों के नीचे शरण चाहते हैं। अपने प्रभारों पर नजर रखने वाले एक अभिभावक की तरह, पहाड़ सुरक्षा और आश्वासन की भावना प्रदान करते हैं, उनकी अटूट उपस्थिति सुरक्षण और महानता की भावना पैदा करती है।

आध्यात्मिक महत्व:

अपनी भौतिक भव्यता के अलावा, हिमालय कई संस्कृतियों में गहरा आध्यात्मिक महत्व रखता है। कविता इस पहलू की ओर इशारा करती है, एक पवित्र अभयारण्य के रूप में पहाड़ों की भूमिका पर प्रकाश डालती है जहां आत्मज्ञान के साधक आध्यात्मिक यात्रा पर निकलते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में देवी-देवताओं के निवास के रूप में, हिमालय को दैवीय उत्कृष्टता के स्थान के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है, जहां नश्वर लोग स्वर्ग के साथ संवाद कर सकते हैं और अस्तित्व के रहस्यों में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

एकता:

कविता का एक केंद्रीय विषय एकता की अवधारणा है, जो हिमालय की चोटियों के अंतर्संबंध का प्रतीक है। अपनी व्यक्तिगत भव्यता के बावजूद, पहाड़ एक बड़े संपूर्ण का हिस्सा हैं, प्रत्येक शिखर श्रृंखला की सामूहिक महिमा में योगदान देती है। एकता की यह धारणा भौतिक क्षेत्र से परे फैली हुई है, जो सभी जीवन के अंतर्संबंध और दुनिया में सद्भाव और सहयोग के महत्व के लिए एक रूपक के रूप में कार्य करती है।

प्रेरणा:

अंत में, कविता हिमालय को प्रेरणा और विस्मय के स्रोत के रूप में मनाती है, जो युगों-युगों के कवियों, कलाकारों और साहसी लोगों की कल्पनाओं को प्रज्वलित करती है। उनकी सरासर सुंदरता और विशालता आश्चर्य और श्रद्धा की भावना को प्रेरित करती है, जो ब्रह्मांड में मानवता के स्थान और सृष्टि के रहस्यों पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करती है। इस तरह, हिमालय एक शाश्वत संग्रहालय के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों को अपनी रचनात्मकता और कल्पना की गहराई का पता लगाने के लिए आमंत्रित करता है।

अथवा

१.४ कविता: सत्ता

१.४.१ "सत्ता" कविता का केंद्रीय विषय क्या है?

उत्तर: "सत्ता" का केंद्रीय विषय सत्ता के आकर्षण और क्षणिक प्रकृति के इर्द-गिर्द घूमता है।

१.४.२ कवि कविता में शक्ति की अवधारणा को किस प्रकार चित्रित करता है?

उत्तर: कवि शक्ति को क्षणभंगुर के रूप में चित्रित करता है, जो इसे इस्तेमाल करने वालों को लुभाने और धोखा देने में सक्षम है।

१.४.३ वाजपेयी अपना संदेश देने के लिए किन साहित्यिक उपकरणों क। उपयोग करते हैं?

उत्तर: वाजपेयी सत्ता के बारे में अपने संदेश को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए कल्पना, प्रतीकवाद और रूपकों का उपयोग करते हैं।

१.४.४ कविता मानवीय महत्वाकांक्षा की जटिलताओं का पता कैसे लगाती है?

उत्तर: कविता यह दर्शाते हुए मानवीय महत्वाकांक्षा की जटिलताओं पर प्रकाश डालती है कि सत्ता कैसे व्यक्तियों को भ्रष्ट और लुभा सकती है।

१.४.५ कविता पाठक में कौन सी भावनाएँ जगाती है?

उत्तर: कविता सत्ता की खोज के प्रति चिंतन, सावधानी और शायद संदेह की भावना भी जगाती है।

१.४.६ वाजपेयी की भाषा का प्रयोग कविता के प्रभाव में कैसे योगदान देता है? ।

उत्तर: वाजपेयी की ओजस्वी भाषा का प्रयोग सत्ता के आकर्षण और खतरों को स्पष्ट रूप से चित्रित करके कविता के प्रभाव को बढ़ाता है।

१.४.७ "सत्ता" शीर्षक का क्या महत्व है?

उत्तर: शीर्षक "सत्ता", जिसका अर्थ शक्ति या अधिकार है, कविता के विषयगत स्वर को निर्धारित करता है और शक्ति गतिशीलता की खोज को रेखांकित करता है।

१.४.८ कविता समकालीन सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों से कैसे मेल खाती है?

उत्तर: कविता सत्ता की प्रकृति और व्यक्तियों और समाजों पर इसके प्रभावों की कालातीत अंतर्दृष्टि प्रदान करके समकालीन सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों से मेल खाती है।

१.४.९ कविता में व्यंग्य की क्या भूमिका है?

उत्तर: विडंबना शक्ति की विरोधाभासी प्रकृति को उजागर करने का काम करती है, यह दिखाती है कि यह कैसे उन लोगों को ऊपर उठा सकती है और भ्रष्ट भी कर सकती है जो इसे चाहते हैं।

१.४.१० वाजपेयी सत्ता की पारंपरिक धारणाओं को कैसे चुनौती देते हैं?

उत्तर: वाजपेयी ने सत्ता की पारंपरिक धारणाओं को स्थायी और निरपेक्ष के बजाय क्षणभंगुर और भ्रामक के रूप में चित्रित करके चुनौती दी।

१.४.११ सत्ता की खोज के परिणामों को चित्रित करने के लिए कवि किस कल्पना का उपयोग करता है?

उत्तर: कवि सत्ता की खोज के परिणामों को चित्रित करने के लिए अंधेरे, छाया और मृगतृष्णा की कल्पना का उपयोग करता है, यह सुझाव देता है कि इससे मोहभंग और नैतिक पतन होता है।

१.४.१२ कविता किस प्रकार मानव स्वभाव की आलोचना प्रस्तुत करती है?

उत्तर: कविता सत्ता की खोज में निहित कमजोरियों और कमजोरियों को उजागर करके, भ्रष्टाचार और नैतिक समझौते की संभावना को उजागर करके मानव स्वभाव की आलोचना प्रस्तुत करती ह।

भाग ख

प्रश्न दो

कहानी: प्रतिज्ञा

२.१ २.१.१ "प्रतिज्ञा" के लेखक कौन हैं और उनके बारे में 2 वाक्य लिखिए?

- उत्तर: "प्रतिज्ञा" कहानी के लेखक मुंशी प्रेमचंद हैं। वह एक प्रसिद्ध लेखक थे जो अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिए जाने जाते थे जो भारतीय समाज में आम लोगों के संघर्षों को चित्रित करते थे।

२.१.२ कहानी का नायक कौन है और उनके चरित्र पर प्रकाश ड़ालिए?

- उत्तर: मुंशी प्रेमचंद की कहानी "प्रतिज्ञा" में हल्कू मुख्य पात्र है। वह एक गरीब लेकिन मेहनती किसान है। हल्कू का चरित्र उसकी सत्यनिष्ठा, दृढ़ता और सम्मान की भावना से परिभाषित होता है। वह ग्रामीणों की नजर में अन्याय के खिलाफ साहस और अवज्ञा का प्रतीक बन जाता है, जो उसकी गरिमा को बनाए रखने और अपने वादे को पूरा करने के लिए उसके अटूट दृढ़ संकल्प की प्रशंसा करते हैं। चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, हल्कू का चरित्र मानवीय स्थिति की अदम्य भावना का प्रतीक है, जो उसके आस-पास के लोगों के बीच प्रशंसा और सम्मान को प्रेरित करता है।

२.१.३ हल्कू का व्यवसाय क्या था और वह अपनी नौकरी पर कैसा था??

- उत्तर: हल्कू का व्यवसाय खेती था, वह एक किसान था। उन्हें एक मेहनती और मेहनती किसान के रूप में चित्रित किया गया था, जो चुनौतियों का सामना करने के बावजूद अपनी भूमि पर अथक परिश्रम कर रहा था। अपने प्रयासों के बावजूद, हल्कू को गाँव के संसाधनों को नियंत्रित करने वाले जमींदारों की शोषणकारी व्यवस्था के कारण गुजारा करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। हालाँकि, अपने काम के प्रति हल्कू का समर्पण उसकी दृढ़ता और विपरीत परिस्थितियों में भी अपने परिवार के भरण-पोषण के प्रति प्रतिबद्धता में स्पष्ट था।

२.१.४ हल्कू को तत्काल पैसों की आवश्यकता क्यों है?

- उत्तर: उनकी बेटी बुधिया बीमार पड़ जाती है और उसे दवा की जरूरत होती है।

२.१.५ रामलाल द्वारा हल्कू को पैसे उधार देने से इंकार करने का क्या कारण है?

- उत्तर: रामलाल अपने इनकार का कारण बकाया कर्ज बताते हैं।

२.१.६ रामलाल के इनकार के बाद हल्कू ने क्या करने की प्रतिज्ञा की?

- उत्तर: वह तब तक अथक परिश्रम करने और अपना सब कुछ त्यागने की कसम खाता है जब तक वह रामलाल का कर्ज नहीं चुका देता।

२.१.७ प्राकृतिक आपदा के कारण हल्कू को क्या नुकसान हुआ?

- उत्तर: उसकी फसलें खोर गया।

२.१.८ जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, ग्रामीण हल्कू को किस प्रकार देखते हैं?

- उत्तर: वे उसे साहस और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में देखने लगते हैं।

२.१.९ रामलाल का कर्ज चुकाने के बाद हल्कू के मन में क्या भावनाएँ आती हैं?

- उत्तर: अपना वादा पूरा करने के बावजूद, हल्कू को हार का एहसास होता है और उसे अपनी जीत की कीमत का एहसास होता है।

२.१.१० कहानी किसकी आलोचना करती है?

- उत्तर: कहानी शोषणकारी सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं की आलोचना करती है जो समाज में पीड़ा और अन्याय को कायम रखती है।

२.१.११ हल्कू की प्रतिज्ञा का उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

- उत्तर: हल्कू की प्रतिज्ञा के कारण उसे वर्षों तक संघर्ष, बलिदान और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिसका प्रभाव अंततः उसके स्वास्थ्य, खुशी और कल्याण पर पड़ा।

२.१.१२ कहानी मुख्य रूप से किस विषय की खोज करती है?

- उत्तर: कहानी मुख्य रूप से गरीबी, सामाजिक अन्याय, लचीलापन और सम्मान के लिए संघर्ष के विषयों की पड़ताल करती ह।

अथवा

२.२ कहानी: पाँच मिनट

रोजमर्रा की जिंदगी के संदर्भ में समय, दिनचर्या, अकेलेपन और सामाजिक असमानता के विषयों की खोज करते हुए मानवीय अनुभव की जटिलताओं पर एक निबंध लिखें।।

उत्तर

श्री उग्रा के "पांच मिनट" में, कथा रोजमर्रा की जिंदगी के संदर्भ में मानवीय अनुभव की जटिलताओं का एक मार्मिक अन्वेषण प्रस्तुत करती है। नायक की दैनिक दिनचर्या के लेंस के माध्यम से, कहानी मानव अस्तित्व की जटिलताओं पर प्रकाश डालते हुए समय, दिनचर्या, अकेलेपन और सामाजिक असमानता के विषयों पर प्रकाश डालती है।

समय कहानी में एक केंद्रीय रूपांकन के रूप में कार्य करता है, जो नायक के हर दिन ट्रेन के लिए पांच मिनट के इंतजार का प्रतीक है। ये प्रतीत होने वाले महत्वहीन क्षण नायक के जीवन में समय के मूल्य को रेखांकित करते हैं, समय की क्षणभंगुर प्रकृति और दिनचर्या की एकरसता के बीच तनाव को उजागर करते हैं। इस दैनिक अनुष्ठान की पुनरावृत्ति अस्तित्व की चक्रीय प्रकृति पर जोर देती है, जहां समय हमारे अनुभवों को आकार और परिभाषित करता है।

नायक की सांसारिक गतिविधियों के माध्यम से चित्रित दिनचर्या, रोजमर्रा की जिंदगी की लय को दर्शाती है। जबकि दिनचर्या संरचना और स्थिरता की भावना प्रदान करती है, यह बोरियत और अलगाव की भावनाओं को भी जन्म दे सकती है। ट्रेन स्टेशन पर नायक की एकांत प्रतीक्षा उस अलगाव का उदाहरण देती है जो दिनचर्या के साथ हो सकता है, जो शेड्यूल और दायित्वों द्वारा शासित दुनिया में व्यक्तियों के बीच अलगाव को उजागर करता है।

अकेलापन कथा में व्याप्त है, जो दूसरों से घिरे होने के बावजूद नायक की अलगाव की भावना में प्रकट होता है। अंधे भिखारी के साथ मुठभेड़ अकेलेपन के सार्वभौमिक अनुभव की एक मार्मिक याद दिलाती है, क्योंकि दोनों पात्र एकांत और मानवीय संबंध की लालसा के साथ अपने स्वयं के संघर्षों को आगे बढ़ाते हैं। इस बातचीत के माध्यम से, नायक सहानुभूति और जुड़ाव के एक क्षण का अनुभव करता है, जो अकेलेपन की उसकी धारणा को चुनौती देता है और आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करता है।

सामाजिक असमानता कहानी के ताने-बाने के माध्यम से सूक्ष्मता से बुनती है, जो अंधे भिखारी की उपस्थिति और समाज के भीतर उसकी हाशिये की स्थिति का प्रतीक है। भिखारी की भेद्यता सामाजिक पदानुक्रम के भीतर मौजूद असमानताओं की एक स्पष्ट याद दिलाती है, जहां व्यक्तियों को अक्सर उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति के आधार पर आंका और महत्व दिया जाता है। भिखारी के साथ नायक की संक्षिप्त बातचीत उसे अपने विशेषाधिकार का सामना करने के लिए प्रेरित करती है और उसे कम भाग्यशाली लोगों के बारे में अपनी धारणाओं पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करती है।

"पांच मिनट" में, श्री उग्रा रोजमर्रा की जिंदगी के ढांचे के भीतर मानवीय अनुभव की जटिलताओं का कुशलता से पता लगाते हैं। समय, दिनचर्या, अकेलेपन और सामाजिक असमानता के विषयों के माध्यम से, कहानी उन चुनौतियों और अवसरों पर एक मार्मिक प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है जो हमारे और हमारे आस-पास की दुनिया के बारे में हमारी समझ को आकार देते हैं। जैसे-जैसे नायक अपने अस्तित्व की पेचीदगियों से जूझता है, वह आत्म-खोज और परिवर्तन की यात्रा पर निकलता है, अंततः मानव अनुभव की गहन अंतर्संबंधता को महसूस करता है।

अथवा

२.३ कहानी: पुरूस्कार

२.३.१ कहानी का नायक कौन है और उसके प्राथमिक लक्ष्य क्या हैं?

उत्तर:

कहानी की नायिका मधुलिका है। उनका प्राथमिक लक्ष्य अपने क्षेत्र में पहचान और सफलता हासिल करना है। मधुलिका का प्राथमिक लक्ष्य पुरुष-प्रधान क्षेत्र में सामाजिक मानदंडों और रूढ़ियों को चुनौती देते हुए खुद को साबित करना है। सफल होने का उसका दृढ़ संकल्प बाधाओं को तोड़ने और खुद को अपने पेशे में एक सक्षम और सम्मानित व्यक्ति के रूप में स्थापित करने की इच्छा से उपजा है।

२.३.२ कहानी में मधुलिका की महत्वाकांक्षा उसके निर्णयों को कैसे प्रभावित करती है?

उत्तर:

मधुलिका की महत्वाकांक्षा उसे पूरी कहानी में कठिन निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है, जिससे अक्सर उसे अपनी ईमानदारी से समझौता करना पड़ता है।

२.३.३ सफलता की खोज में मधुलिका को किन सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ता है, और वह उनका जवाब कैसे देती है?

उत्तर:

मधुलिका को सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं के अनुरूप दबाव का सामना करना पड़ता है, खासकर अपने करियर और सामाजिक स्थिति के संबंध में। वह खुद के प्रति सच्ची रहने की कोशिश करते हुए इन दबावों पर काबू पाकर प्रतिक्रिया देती है।

२.३.४ मधुलिका को किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है, और ये दुविधाएँ उसके चरित्र विकास को कैसे आकार देती हैं?

उत्तर:

मधुलिका ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और व्यक्तिगत मूल्यों और पेशेवर महत्वाकांक्षा के बीच संतुलन से संबंधित दुविधाओं से जूझती है। ये दुविधाएँ उसके चरित्र विकास और आंतरिक संघर्ष में योगदान करती हैं।

२.३.५ क्या आपको लगता है कि मधुलिका की परिस्थितियों को देखते हुए कहानी में उसका चयन उचित था? अपना जवाब समझाएं।

उत्तर:

मधुलिका की पसंद का औचित्य व्यक्तिगत दृष्टिकोण के आधार पर भिन्न हो सकता है। कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि उनके द्वारा सामना की गई चुनौतियों को देखते हुए उनके फैसले उचित थे, जबकि अन्य उनकी ईमानदारी से समझौता करने के लिए उनकी आलोचना कर सकते हैं।

२.३.६ आपके अनुसार मधुलिका के निर्णयों का भविष्य में उसके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर:

मधुलिका के निर्णयों के परिणामों से आंतरिक संघर्ष, तनावपूर्ण रिश्ते और संभावित रूप से उसकी प्राथमिकताओं और मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन हो सकता है।

२.३.७ मधुलिका के मूल्यों और महत्वाकांक्षाओं की तुलना कहानी के एक अन्य महत्वपूर्ण पात्र सिद्धार्थ के मूल्यों और महत्वाकांक्षाओं से करें।

उत्तर:

मधुलिका महत्वाकांक्षा और सामाजिक मान्यता से प्रेरित है, सिद्धार्थ बाहरी मान्यता से अधिक प्रामाणिकता, ईमानदारी और व्यक्तिगत संतुष्टि को महत्व देते हैं।

२.३.८ कहानी में ईमानदारी बनाम महत्वाकांक्षा के विषय पर विचार करें। मधुलिका की यात्रा इस विषय का उदाहरण कैसे देती है?

उत्तर:

मधुलिका की यात्रा ईमानदारी बनाम महत्वाकांक्षा के विषय का उदाहरण देती है क्योंकि वह सफलता प्राप्त करने और अपने सिद्धांतों के प्रति सच्चे रहने के बीच तनाव से जूझती है। अंततः, वह बाहरी सत्यापन के स्थान पर सत्यनिष्ठा को चुनती है।

भाग ग

प्रश्न तीन

नाटक: मैं और केवल मैं

३.१.१ "मैं और केवल मैं" में नायक का केंद्रीय संघर्ष क्या है?

उत्तर:

नायक, रामेश्वर, एक युवा शहरी, अस्तित्वगत संकट से जूझ रहा है और जीवन के अर्थ पर सवाल उठा रहा है। "मैं और केवल मैं" में नायक अस्तित्व के बुनियादी सवालों से जूझता है, दुनिया में अपनी जगह और अपने कार्यों के पीछे के उद्देश्य पर विचार करता है। आत्मनिरीक्षण क्षणों और बाहरी संघर्षों की एक श्रृंखला के माध्यम से, वे पहचान की जटिलताओं को पार करते हैं और जीवन की अनिश्चितता के बीच स्पष्टता की तलाश करते हैं।

३.१.२ पूरे नाटक में नायक अपने आंतरिक विचारों और भावनाओं से कैसे जुड़ा रहता है?

उत्तर:

पूरे नाटक में, नायक अपनी पहचान और उद्देश्य पर विचार करते हुए आत्मविश्लेषणात्मक संवाद में संलग्न रहता है। "मैं और केवल मैं" का नायक रामेश्वर आत्मनिरीक्षण के माध्यम से अपने आंतरिक विचारों और भावनाओं को गहन चिंतन और चिंतन में संलग्न करता है। इसके अतिरिक्त, वह एकांत में सांत्वना चाहता है, अपनी भावनाओं को संसाधित करने और अपने मानस की जटिलताओं को सुलझाने के लिए अक्सर शांत स्थानों पर चला जाता है। रानेश्वर लेखन या कला जैसे रचनात्मक माध्यमों के माध्यम से भी खुद को अभिव्यक्त करते हैं, इन माध्यमों का उपयोग करके अपनी आंतरिक उथल-पुथल को बाहर निकालते हैं और स्पष्टता हासिल करते हैं। इसके अलावा, वह अपने भरोसेमंद दोस्तों या सलाहकारों पर भरोसा कर सकता है, अपने अंतरतम संघर्षों को साझा कर सकता है और जरूरत के समय मार्गदर्शन और समर्थन मांग सकता है। इन विभिन्न माध्यमों से, रामेश्वर अपनी भावनाओं की अराजकता के बीच अर्थ और उद्देश्य खोजने का प्रयास करते हुए, अपनी आंतरिक दुनिया से जूझता है।

३.१.३ नायक की यात्रा को आकार देने में विभिन्न पात्रों के साथ विभिन्न मुठभेड़ों की क्या भूमिका है?

उत्तर:

दोस्तों, परिवार और अजनबियों के साथ विभिन्न मुठभेड़ें नायक को अपने आंतरिक भय और इच्छाओं का सामना करने के लिए प्रेरित करती हैं। 3. दोस्तों, परिवार और अजनबियों के साथ विभिन्न मुठभेड़ें नायक को अपने भीतर के डर और इच्छाओं का सामना करने के लिए प्रेरित करती हैं, जिससे उन्हें अपने दृष्टिकोण और विश्वासों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। ये अंतःक्रियाएं विकास और आत्म-खोज के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करती हैं, जो नायक को बाहरी अपेक्षाओं और सामाजिक मानदंडों के साथ अपने आंतरिक संघर्षों को सुलझाने के लिए चुनौती देती हैं।

३.१.४ कौन से प्रचलित विषय नायक द्वारा अनुभव की गई अलगाव की भावना में योगदान करते हैं?

उत्तर:

अलगाव और अलगाव के विषय कथा में व्याप्त हैं क्योंकि नायक सार्थक स्तर पर दूसरों के साथ जुड़ने के लिए संघर्ष करता है।

३.१.५ "मैं और केवल मैं" में अधिकांश कार्रवाई कहाँ होती है?

उत्तर:

एक हलचल भरे शहर में नाटक की सेटिंग नायक की आत्म-खोज की आंतरिक यात्रा के लिए पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती है।

३.१.६ नाटककार मानवीय अनुभव की जटिलताओं को नाटक में कैसे अभिव्यक्त करता है?

उत्तर:

प्रतीकात्मक कल्पना और विचारोत्तेजक भाषा के माध्यम से, नाटककार मानवीय अनुभव की जटिलताओं को पकड़ता है।

३.१.७ कौन से तत्व पूरी कहानी में दर्शकों की रुचि बनाए रखने में मदद करते हैं?

उत्तर:

आत्मनिरीक्षण के क्षणों के साथ-साथ जीवंत संवाद और तनाव के क्षण भी दर्शकों को बांधे रखते हैं।

३.१.८ नाटक के दौरान नायक की यात्रा कैसे विकसित होती है?

उत्तर:

जैसे-जैसे कहानी सामने आती है, नायक धीरे-धीरे अपनी विशिष्टता के साथ सामने आता है और आत्म-स्वीकृति में सांत्वना पाता है।

३.१.९ अस्तित्वगत विषयों की खोज का दर्शकों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर:

नाटक में अस्तित्वगत विषयों की खोज दर्शकों को प्रभावित करती है, आत्मनिरीक्षण और चिंतन को प्रेरित करती है।

३.१.१० "मैं और केवल मैं" अपने दर्शकों को क्या व्यापक संदेश देता है?

उत्तर:

"मैं और केवल मैं" आत्म-जागरूकता और किसी के व्यक्तित्व को अपनाने के महत्व का एक मार्मिक अनुस्मारक प्रदान करता है। "मैं और केवल मैं" आत्म-जागरूकता और किसी के व्यक्तित्व को अपनाने के महत्व की एक मार्मिक याद दिलाता है, दर्शकों से आत्म-खोज और प्रामाणिकता की अपनी यात्रा शुरू करने का आग्रह करता है।

अथवा

३.२ नाटक के शीर्षक "मैं और केवल मैं" के अनुसार कहानी को अपने शब्दों में समझाइए, यह ध्यान में रखते हुए कि कहानी मुख्य पात्र के साथ कैसे आगे बढ़ती है।

भगवतीचरन वर्मा के नाटक "मैं और केवल मैं" एक व्यक्ति की आत्मकेंद्रितता और अहंकार की गाथा है। यह नाटक मुख्य पात्र की यात्रा को दर्शाता है, जो अपने व्यक्तिगत अनुभवों और अहंकार के कारण अपने जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय लेता है।

कहानी की शुरुआत मुख्य पात्र की आत्म-प्रशंसा और अपने कार्यों के लिए अपनी श्रेष्ठता की भावना से होती है। वह अपने चारों ओर के लोगों और स्थितियों को केवल अपनी दृष्टिकोण से देखता है, और उसके निर्णय और कार्य उसके अपने स्वार्थ पर आधारित होते हैं। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, उसके रिश्ते, करियर और सामाजिक जीवन पर उसके इस स्वभाव का प्रभाव स्पष्ट होता जाता है।

मुख्य पात्र की यह आत्मकेंद्रितता उसके जीवन में संघर्ष और विपत्तियों का कारण बनती है। वह अपने दोस्तों और परिवार के साथ संबंधों में दरार डालता है, और अपने करियर में भी विभिन्न कठिनाइयों का सामना करता है। अपने अहंकार के कारण वह मदद मांगने या दूसरों की सलाह मानने से इंकार करता है, जिससे उसकी स्थिति और बिगड़ती जाती है।

कहानी के अंत में, मुख्य पात्र को अपनी गलतियों का अहसास होता है। उसे समझ में आता है कि जीवन में सच्ची खुशी और सफलता पाने के लिए केवल "मैं" पर ध्यान केंद्रित करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि दूसरों के साथ सामंजस्य और सहयोग भी महत्वपूर्ण है। इस आत्मबोध के साथ, वह अपने जीवन में सुधार करने और अपने रिश्तों को पुनः स्थापित करने का प्रयास करता है।

"मैं और केवल मैं" नाटक का मुख्य संदेश यह है कि अहंकार और आत्मकेंद्रितता अंततः व्यक्ति के जीवन में नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, और वास्तविक सुख और संतोष दूसरों के साथ मिलकर काम करने और सामूहिकता में ही पाया जा सकता है।

Total: 70 marks